ध्येय पथ
अगस्त 2020

प्रार्थना सभा का प्रारम्भ–

01 अगस्त से महाविद्यालय में ऑनलाइन प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया।

ऑन लाइन कक्षाएँ प्रारम्भ–

01 अगस्त से स्नातक कला, विज्ञान एवं वाणिज्य भाग दो व तीन तथा स्नातकोत्तर अन्तिम वर्ष की ऑन लाइन कक्षाएँ प्रारम्भ हुई।

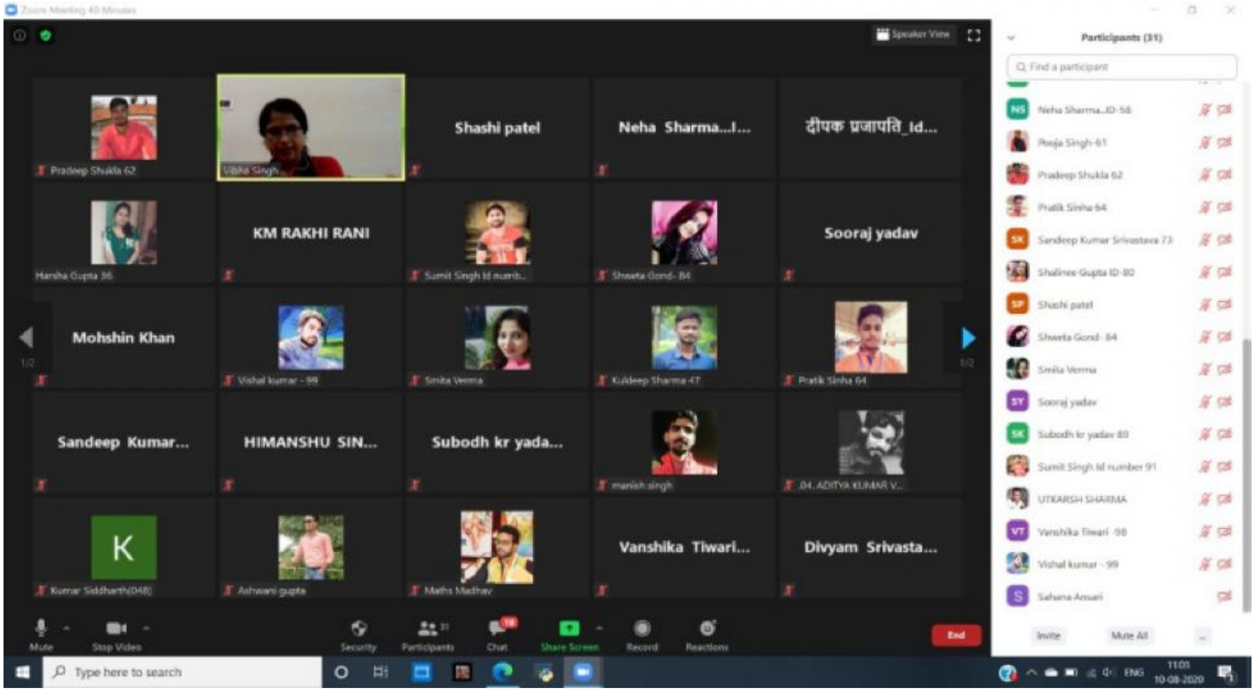

प्राचीन इतिहास विभाग में एकदिवसीय ऑन लाइन संगोष्ठी–

01 अगस्त को "प्राचीन इतिहास पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग" तथा "भारतीय इतिहास संकलन समिति गोरक्ष प्रांत" के संयुक्त तत्वाधान में" राममंदिर निर्माण : सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय एवं ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य" विषय पर एक दिवसीय ऑनलाइन संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी दो सत्रों में चली।

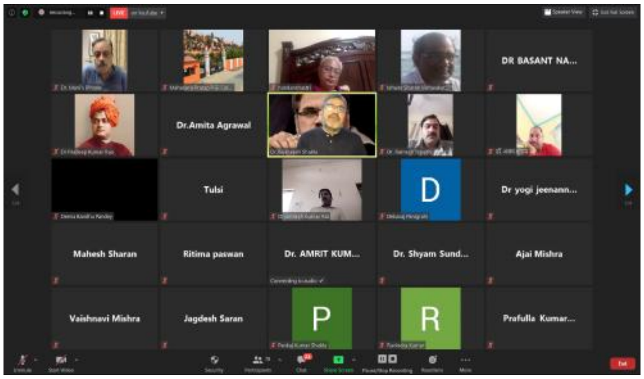

प्रथम सत्र (10:45 से11:50) में बीज वक्तव्य महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा के प्रो० रजनीश कुमार शुक्ल द्वारा दिया गया तथा राममंदिर निर्माणः सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय एवं ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य विशय पर व्याख्यान उच्चतर शिक्षा सेवा चयन आयोग, प्रयागराज, उत्तरप्रदेश के अध्यक्ष प्रो० ईश्वर शरण विश्वकर्मा द्वारा दिया गया।

द्वितीय सत्र (12:15 से 12:40) में राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान, नई दिल्ली एवं पूर्व महानिदेशक, राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली के पूर्व कुलपति प्रो० बुध रश्मि मणि तथा भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद एवं भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के सदस्य सचिव प्रो० कुमार रत्नम ने इस विषय पर विचार प्रस्तुत किया गया।

समापन–

एक दिवसीय ऑनलाइन संगोष्ठी के समापन के अवसर पर भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली के राष्ट्रीय संगठन सचिव डॉ० बालमुकुंद पांडेय ने विचार प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन प्राचीन इतिहास विभाग के प्रभारी श्री सुबोध कुमार मिश्र तथा आभार ज्ञापन प्राचार्य डॉ० प्रदीप कुमार राव ने किया।

मैथिली शरण गुप्त जयन्ती

03 अगस्त को ऑनलाइन प्रार्थना सभा में मैथिली शरण गुप्त की जयन्ती के अवसर पर महाविद्यालय परिवार द्वारा मैथिली शरण गुप्त ,महान साहित्यकार व महापुरुष को श्रद्धासुमन अर्पित किया गया।

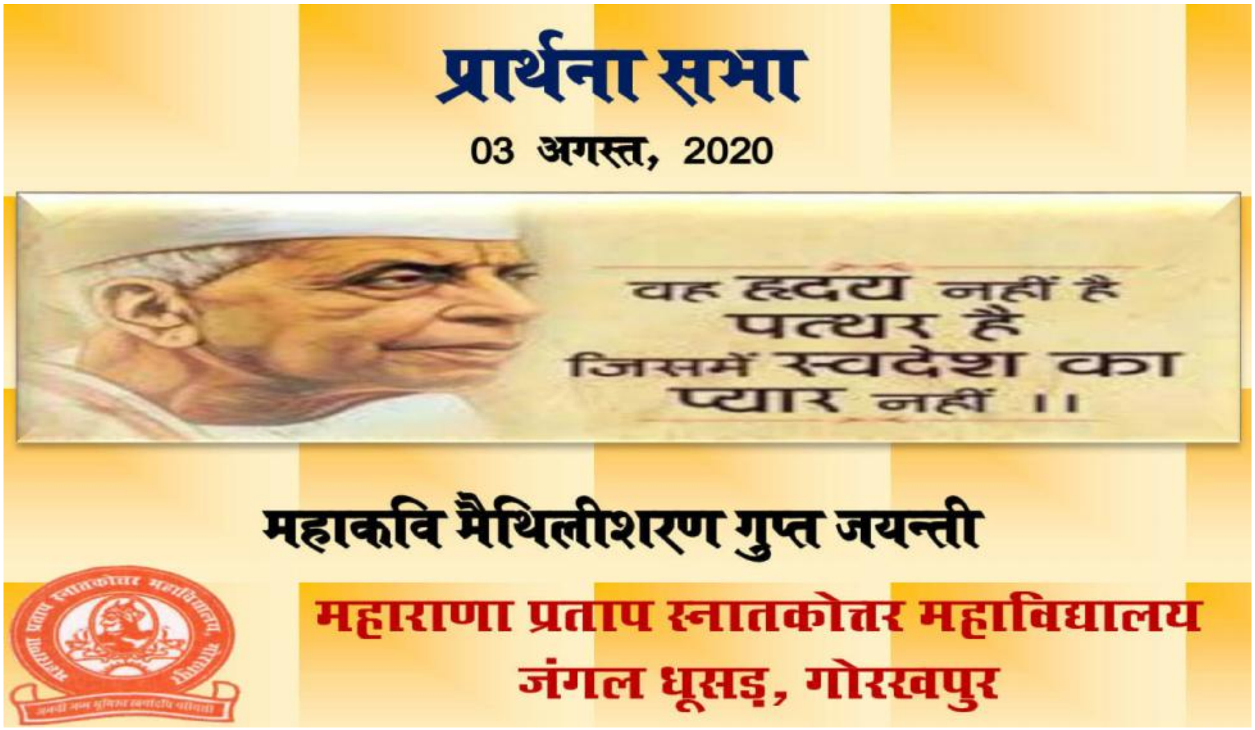

रविन्द्र नाथ टैगोर पुण्यतिथि –

07 अगस्त को रविन्द्र नाथ टैगोर पुण्यतिथि के अवसर पर महाविद्यालय परिवार की ओर से ऑनलाइन श्रद्धा सुमन अर्पित किया गया।

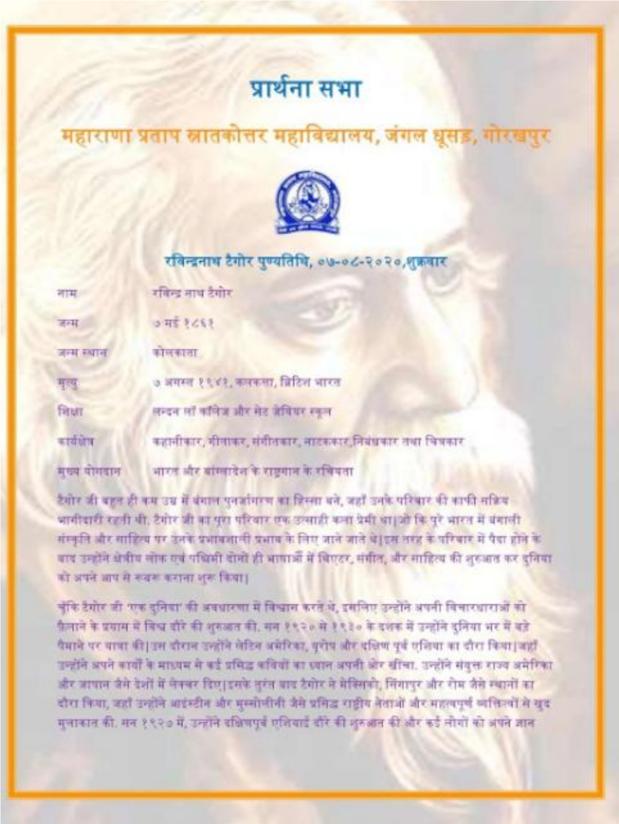
प्रार्थना सभा

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर

रविन्द्रनाथ टैगोर पुण्यतिथि, ०७-०८-२०२०,शुक्रवार

नाम	रविन्द्र नाथ टैगोर
जन्म	७ मई १८६१
जन्म स्थान	कोलकाता
मृत्यु	७ अगस्त १९४१, कलकत्ता, ब्रिटिश भारत
शिक्षा	लन्दन लॉ कॉलेज और सेंट ज़ेवियर स्कूल
कार्यक्षेत्र	कहानीकार, गीतकार, संगीतकार, नाटककार,निबंधकार तथा चित्रकार
मुख्य योगदान	भारत और बांग्लादेश के राष्ट्रगान के रचियता

टैगोर जी बहुत ही कम उम्र में बंगाल पुनर्जागरण का हिस्सा बने, जहाँ उनके परिवार की काफी सक्रिय भागीदारी रहती थी. टैगोर जी का पूरा परिवार एक उत्साही कला प्रेमी था|जो कि पूरे भारत में बंगाली संस्कृति और साहित्य पर उनके प्रभावशाली प्रभाव के लिए जाने जाते थे|इस तरह के परिवार में पैदा होने के बाद उन्होंने क्षेत्रीय लोक एवं पश्चिमी दोनों ही भाषाओं में थिएटर, संगीत, और साहित्य की शुरुआत कर दुनिया को अपने आप से रूबरू कराना शुरू किया|

चूँकि टैगोर जी 'एक दुनिया' की अवधारणा में विश्वास करते थे, इसलिए उन्होंने अपनी विचारधाराओं को फैलाने के प्रयास में विश्व दौरे की शुरुआत की. सन १९२० से १९३० के दशक में उन्होंने दुनिया भर में बड़े पैमाने पर यात्रा की|इस दौरान उन्होंने लेटिन अमेरिका, यूरोप और दक्षिण पूर्व एशिया का दौरा किया|जहाँ उन्होंने अपने कार्यों के माध्यम से कई प्रसिद्ध कवियों का ध्यान अपनी ओर खींचा. उन्होंने संयुक्त राज्य अमेरिका और जापान जैसे देशों में लेक्चर दिए|इसके तुरंत बाद टैगोर ने मेक्सिको, सिंगापुर और रोम जैसे स्थानों का दौरा किया, जहाँ उन्होंने आइंस्टीन और मुसोलिनी जैसे प्रसिद्ध राष्ट्रीय नेताओं और महत्वपूर्ण व्यक्तियों से खुद मुलाकात की. सन १९२७ में, उन्होंने दक्षिणपूर्व एशियाई दौरे की शुरुआत की और कई लोगों को अपने ज्ञान

और साहित्यिक कार्यों से प्रेरित किया|इन्होंने इस अवसर का उपयोग कर कई विश्व के नेताओं से भारतीयों और अंग्रेजों के बीच के मुद्दों पर चर्चा करने का भी प्रयास किया|इन्होंने अपने जीवनकाल के दौरान, कई कविताओं, उपन्यासों और लघु कथाओं की रचना की|हालाँकि उन्होंने बहुत कम उम्र में लिखना शुरू कर दिया था|

टैगोर जी की अधिकांश कवितायेँ, कहानियां, गीत और उपन्यास बाल विवाह और दहेज जैसे उस समय के दौरान चल रही सामाजिक बुराइयों के बारे में होते थे|लेकिन उनके द्वारा लिखे गए गीत भी काफी प्रचलित थे, उनके गीतों को 'रविन्द्र गीत' कहा जाता था. सभी को यह ज्ञात होगा कि हमारे देश के राष्ट्रीय गान –'जन गण मन' की रचना इन्हीं के द्वारा की गई है|इसके अलावा उन्होंने बांग्लादेशी राष्ट्रीय गीत –'आमार सोनार बांग्ला' की भी रचना की थी|

टैगोर जी का राजनीतिक दृष्टिकोण थोड़ा अलग था|हालाँकि उन्होंने साम्राज्यवाद की निंदा की, उन्होंने भारत में ब्रिटिश प्रशासन की निरंतरता एवं राष्ट्रवाद का समर्थन किया|उन्होंने महात्मा गाँधी द्वारा सितंबर १९२५ में प्रकाशित 'द कल्ट ऑफ द चरखा' में 'स्वदेशी आन्दोलन' की आलोचना की|उन्होंने ब्रिटिश और भारतीयों के सह –अस्तित्व में विश्वास किया|और उनका कहना था कि भारत में ब्रिटिश शासन 'हमारी सामाजिक बीमारी के राजनीतिक लक्षण है'. वे कभी भी साम्राज्यवाद के समर्थन में नहीं थे|वे इसे मानवता की सबसे बड़ी चुनौती मानते थे. उन्होंने शिक्षा प्रणाली की भी आलोचना की जब भारत में अंग्रेजी भाषा के लिए मजबूर किया गया था. कभी – कभी वे भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का समर्थन भी करते थे. स्वतंत्र भारत की उनकी दृष्टि पूरी तरह से विदेशी शासन से स्वतंत्रता पर आधारित नहीं थी, बल्कि अपने नागरिकों के विचारों और विवेक की स्वतंत्रता पर आधारित थी|

सन १९४० में, ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी ने उन्हें शांतिनिकेतन में आयोजित एक विशेष समारोह में डॉक्टरेट ऑफ लिटरेचर से सम्मानित किया था|

अंग्रेजी बोलने वाले राष्ट्रों में उनकी सबसे अधिक लोकप्रियता उनके द्वारा की गई रचना 'गीतांजलि : गीत की पेशकश' से बढ़ी|इससे उन्होंने दुनिया में काफी ख्याति प्राप्त की|और उन्हें इसके लिए साहित्य में प्रतिष्ठित नोबेल पुरस्कार जैसा सम्मान दिया गया. उस समय वे नॉन यूरोपीय और एशिया के पहले नोबेल पुरस्कार प्राप्त करने वाले विजेता बने|

सन १९१५में उन्हें ब्रिटिश क्राउन द्वारा नाइटहुड भी दिया गया था, किन्तु जलियांवाला बाग नरसंहार के बाद उन्होंने ३० मई १९१९ को अपने नाईटहुड को छोड़ दिया|उन्होंने कहा कि उनके लिए नाईटहुड का कोई मतलब नहीं था, जब अंग्रेजो ने अपने साथी भारतीयों को मनुष्यों के रूप में मानना भी जरुरी नहीं समझा|

इनके जीवन के अंतिम चार वर्ष बीमारियों के चलते दर्द से गुजरे|जिसके कारण सन १९३७ में वे कोमा में चले गये. वे ३ साल तक कोमा में ही रहे|इस पीड़ा की विस्तृत अवधि के बाद ७ अगस्त, १९४१ को उनका देहवसान हो गया|उनकी मृत्यु जोरसांको हवेली में हुई जहाँ उन्हें लाया गया था|

महाविद्यालय परिवार ऐसे महापुरुष को श्रद्धा सुमन अर्पित करता है |

प्राचीन इतिहास, पुरात्व एवं संस्कृति विभाग द्वारा दो दिवसीय ऑन लाइन राष्ट्रीय संगोष्ठी–

उद्घाटन

07 – 08 अगस्त को "प्राचीन भारतीय इतिहास के अछूते पृष्ठ" विषय पर दो दिवसीय ऑनलाइन राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग द्वारा किया गया। संगोष्ठी का उद्घाटन 07 अगस्त को मुख्य अतिथि अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना, नई दिल्ली के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रो० शिवाजी सिंह ने "वैदिक सभ्यता एवं संस्कृति" विषय पर उद्बोधन प्रस्तुत कर किया। उद्घाटन समारोह का संचालन प्राचीन इतिहास विभाग के प्रभारी श्री सुबोध कुमार मिश्र तथा आभार ज्ञापन प्राचार्य डॉ० प्रदीप कुमार राव ने किया।

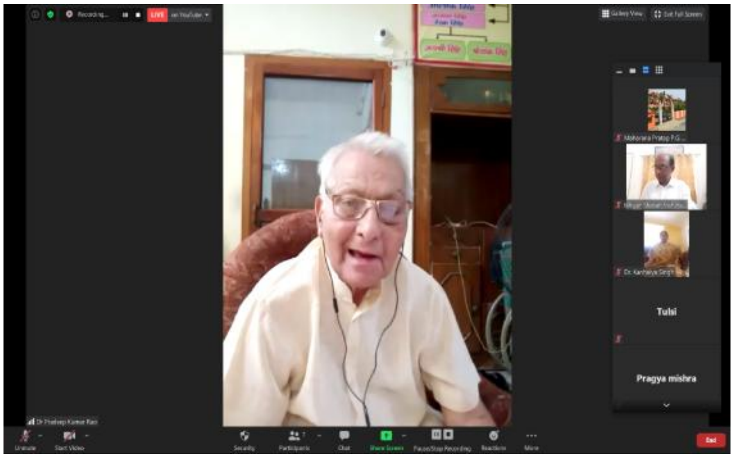

प्रथम तकनीकी सत्र

प्रथम तकनीकी सत्र में बतौर अध्यक्ष उच्चतर शिक्षा सेवा आयोग, प्रयागराज, उत्तर प्रदेष के अध्यक्ष प्रो ईश्वर शरण विश्वकर्मा ने ”भारतीय काल गणना एवं पंचांग ’विषय पर विचार प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन श्री सुबोध कुमार मिश्र ने किया।

द्वितीय तकनीकी सत्र

द्वितीय तकनीकी सत्र में दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर, प्राचीन इतिहास पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो० विपुला दुबे ने” महाकाव्यः ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में” विशय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन श्री सुबोध कुमार मिश्र तथा आभार ज्ञापन डॉ० प्रदीप कुमार राव ने किया।

तृतीय तकनीकी सत्र

08 अगस्त को राष्ट्रीय संगोष्ठी के दूसरे दिन प्रातः 10:30 बजे तृतीय तकनीकी सत्र प्रारम्भ हुआ। इस सत्र में जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय नई दिल्ली, संस्कृत विभाग के प्रो संतोष शुक्ला ने ’आदि शंकराचार्य का धर्म दर्शन’ विषय पर उद्‌बोधन दिया। कार्यक्रम का संचालन प्रो० सुबोध कुमार मिश्र तथा आभार ज्ञापन डॉ० प्रदीप कुमार राव ने किया।

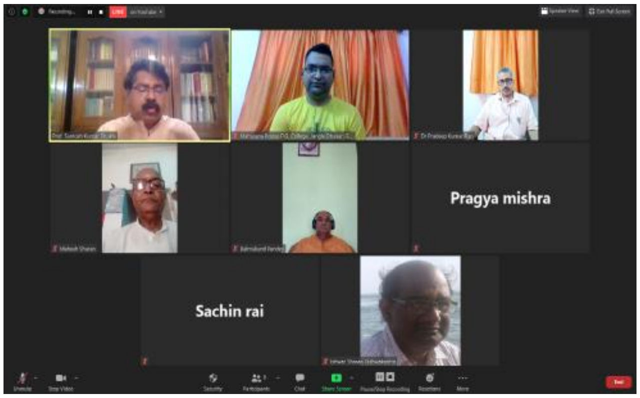

चतुर्थ तकनीकी सत्र

08 अगस्त को अपराहन 12:30 बजे चतुर्थ तकनीकी सत्र प्रारम्भ हुआ। इस सत्र में दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो० राजवंत राव ने ”श्रमण एवं नाथ परम्परा तथा महायोगी गोरखनाथ’ विशय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन श्री सुबोध कुमार मिश्र तथा आभार ज्ञापन डॉ० प्रदीप कुमार राव ने किया।

समापन सत्र

08 अगस्त को अपराहन 03 बजे अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना,नई दिल्ली, राष्ट्रीय संगठन मंत्री डॉ० बालमुकुन्द पाण्डेय ने समापन उद्बोधन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन श्री सुबोध कुमार मिश्र तथा आभार ज्ञापन प्राचार्य डॉ० प्रदीप कुमार राव ने किया।

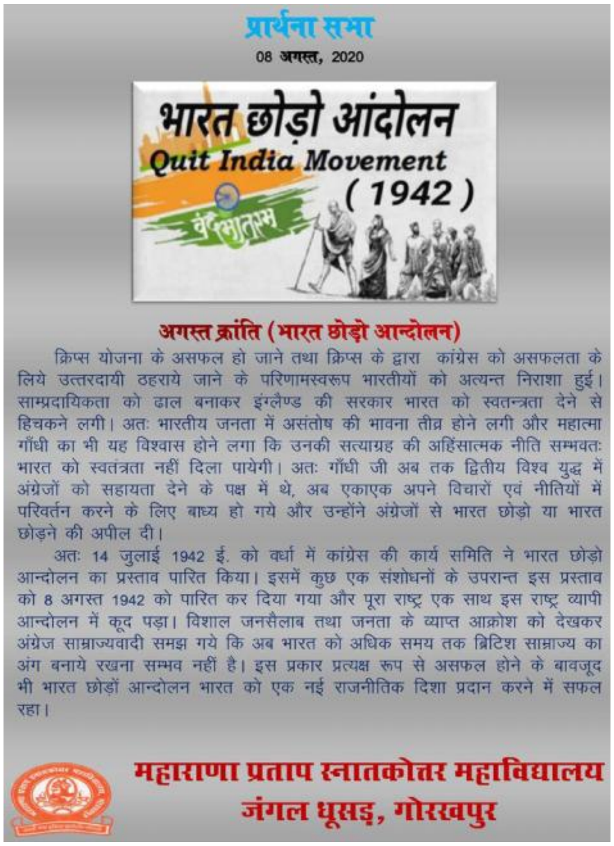

भारत छोड़ो आन्दोलन

08 अगस्त को ऑनलाइन प्रार्थना सभा में भारत छोड़ों आन्दोलन घटना पर महान क्रान्तिकारियों को महाविद्यालय परिवार की ओर से श्रद्धाजंलि अर्पित की गई।

काकोरी कांड स्मृति दिवस

09 अगस्त को ऑनलाइन प्रार्थना सभा में काकोरी कांड स्मृति दिवस के अवसर पर काकोरी कांड घटना से सम्बधित अमर वीर क्रान्तिकारियों को महाविद्यालय परिवार की ओर से श्रद्धासुमन अर्पित किया गया।

साप्ताहिक समीक्षा बैठक

10 अगस्त को ऑनलाइन प्राचार्य –शिक्षक साप्ताहिक समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में ऑनलाइन पठन पाठन पर सभी षिक्षकों से वार्ता की गई। बैठक में शिक्षक व प्राचार्य उपस्थित रहे।

खुदीराम बोस पुण्यतिथि

11 अगस्त को ऑनलाइन प्रार्थना सभा में युवा क्रान्तिकारी शहीद खुदीराम बोस की पुण्यतिथि के अवसर पर महाविद्यालय परिवार की ओर से श्रद्वांजलि अर्पित की गयी ।

राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा आयोजित विशिष्ट व्याख्यान

11 अगस्त को अमर शहीद बन्धू सिंह शहादत दिवस के पूर्व संध्या पर राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा ऑनलाइन विशिष्ट व्याख्यान का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रुप में बी० एड० विभाग के के प्रवक्ता श्री जितेन्द्र कुमार प्रजापति ने विचार प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम अधिकारी डॉ० सौरभ सिंह ने किया।

अमर शहीद बन्धू सिंह शहादत दिवस

12 अगस्त को ऑनलाइन प्रार्थना सभा में अमर शहीद बन्धू सिंह शहादत दिवस के अवसर पर महाविद्यालय परिवार की ओर से भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई ।

प्रार्थना सभा

12 अगस्त, 2020

अमर शहीद बन्धु सिंह

अमर शहीद बन्धू सिंह का जन्म 01 मई, सन् 1833 ई. को गोरखपुर के डुमरिया नामक स्थान पर हुआ। इनके पिता बाबू शिव प्रसाद सिंह डुमरिया रियासत के एक जाने–माने शखस्यित थे। बंधु सिंह एक क्रांतिकारी थे। उनकी तरकुलहा देवी में विशेष आस्था थी। लगभग 25 वर्ष की अवस्था में ही 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम में बन्धू सिंह ने गोरखपुर परिक्षेत्र की कमान संभाली। स्वतंत्रता आन्दोलन के इस सिपाही से अंग्रेजी प्रशासन काँपने लगा। बंधु सिंह को ब्रिटिश पुलिस ने आर्यनगर चौराहा, गोरखपुर से गिरफ्तार कर 12 अगस्त सन् 1857 ई. को फॉसी पर लटका दिया। उनकी सम्पूर्ण रियासत अंग्रेज प्रशासन द्वारा जब्त कर ली गई। वर्तमान में इनका स्मारक 'अमर शहीद बंधु सिंह' के नाम से आर्यनगर चौराहे पर स्थित है। महाविद्यालय परिवार ऐसे युवा क्रन्तिकारी को उनकी पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि एवं श्रद्धा सुमन अर्पित करता है।

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर

भारत विभाजन की पूर्व संध्या पर ऑनलाइन व्याख्यान

13 अगस्त को भारत विभाजन की पूर्व संध्या पर ऑनलाइन व्याख्यान आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली, शोध एवं प्रशासन निदेशक डॉ० ओम जी उपाध्याय ने "भारत विभाजन की अन्तःकथा एवं अखण्ड भारत" विशय पर विचार प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन प्राचीन इतिहास विभाग प्रभारी श्री सुबोध कुमार मिश्र तथा आभार ज्ञापन प्राचार्य डॉ० प्रदीप कुमार राव ने किया।

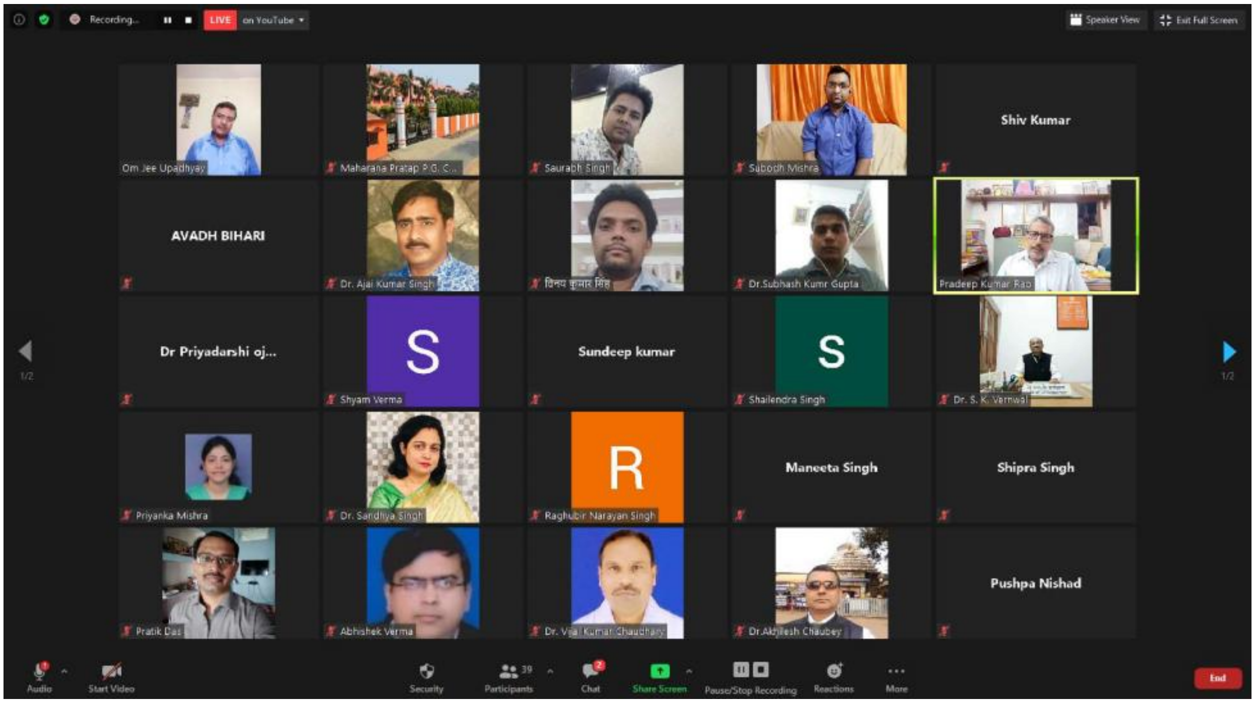

अहिल्याबाई पुण्य तिथि –

13 अगस्त को ऑनलाइन प्रार्थना सभा में अहिल्या बाई पुण्य तिथि के अवसर पर महाविद्यालय परिवार की ओर से अहिल्या बाई होल्कर को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

प्रार्थना सभा

13 अगस्त, 2020

अहिल्याबाई पुण्य तिथि

अहिल्याबाई इतिहास प्रसिद्ध सूबेदार मल्हारराव होल्कर के पुत्र खाण्डेराव की पत्नी थी। जब इनका विवाह हुआ उस समय मात्र 12 वर्ष की थी। उनतीस वर्ष की अवस्था में ही वह विधवा हो गई। जब वह 42–43 वर्ष की हुई, पुत्र मालेराव का देहांत हो गया। अहिल्याबाई ने स्वयं राजसत्ता की बागडोर संभाली। अपने राज्य की सीमाओं के बाहर भारत भर के प्रसिद्ध तीर्थों और स्थानों में मंदिर, घाट, कुएं आदि का निर्माण करवाया, मार्ग बनवाए–सुधरवाए, भूखों के लिए अन्नसत्र खोले, प्यासों के लिए प्याऊ बिठलाई, मन्दिरों में शास्त्रों के चिन्तन–मनन हेतु विद्वानों की नियुक्ति की। साथ ही साथ वह मरते दम तक सदैव न्याय करने का प्रयत्न करती रही। उनके इन्हीं उदारमना व्यवहार के कारण लोग इन्हें 'देवी' के अवतार के रूप में मानते हैं। ऐसी उदार, न्याय प्रिय एवं प्रजा वत्सल शासिका का निधन भाद्रपद कृष्ण चतुर्दशी (13 अगस्त 1795) को हुआ। तब से इन्दौर में प्रतिवर्ष भाद्रपद कृष्ण चतुर्दशी के दिन अहिल्योत्सव होता चला आ रहा है। महाविद्यालय परिवार इनकी पुण्यतिथि पर अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जंगल धूसड़, गोरखपुर

स्वतंत्रता दिवस

15 अगस्त को महाविद्यालय में 73 वाँ स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर कोविड – 19 प्रोटोकॉल का पूर्णतः पालन करते हुए प्राचार्य द्वारा ध्वजारोहण के साथ राष्ट्रगान व वन्देमातरम किया गया तत्पश्चात

प्राचार्य शिक्षक बैठक का आयोजन श्रीराम सभागार में सम्पन्न हुआ। बैठक में ऑनलाइन चुनाव, सप्तदिवसीय व्याख्यानमाला आदि विषय पर चर्चा की गई।

युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजय नाथ जी महाराज की 51 वीं तथा राष्ट्र सन्त ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की 6 वीं पुण्यतिथि समारोह के अन्तर्गत आयोजित साप्ताहिक ऑनलाइन व्याख्यानमाला(17–23 अगस्त 2020)–

व्याख्यानमाला का उद्घाटन

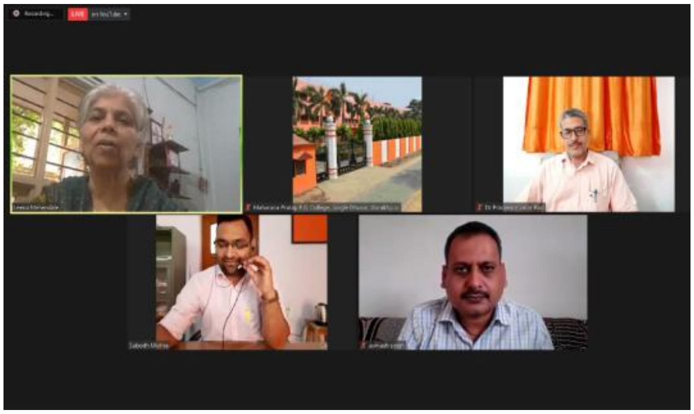

17 अगस्त को युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजय नाथ जी महाराज की 51 वीं तथा राष्ट्र सन्त ब्रहालीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की 6 वीं पुण्यतिथि समारोह के अन्तर्गत आयोजित ऑनलाइन साप्ताहिक व्याख्यानमाला के उद्घाटन अवसर पर प्रतिष्ठित सामाजिक कार्यकर्ता एवं गोवा की पूर्व मुख्य सूचना आयुक्त श्रीमती लीना महेंदले ने राष्ट्रीय चेतना विशय पर उद्बोधन दिया। कार्यक्रम का संचालन प्राचीन इतिहास विभाग के अध्यक्ष श्री सुबोध कुमार मिश्र, अतिथि स्वागत उदबोधन राजनीति विज्ञान के अध्यक्ष डॉ व अविनाश प्रताप सिंह तथा आभार ज्ञापन प्राचार्य डॉ॰ प्रदीप कुमार राव ने किया।

व्याख्यानमाला के दूसरे दिन

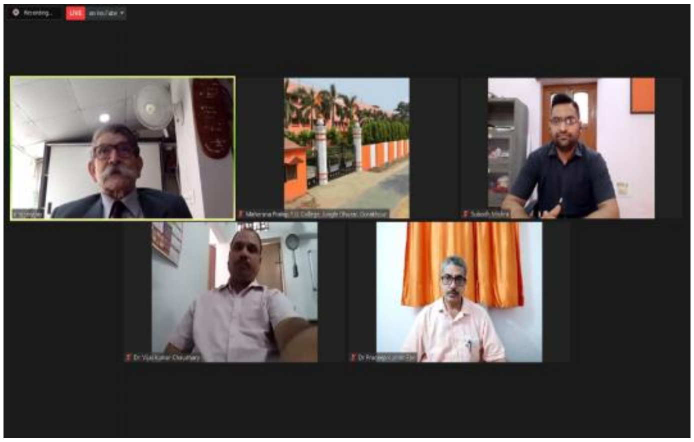

18 अगस्त को मुख्य वक्ता भारतीय सेना के सेवानिवृत्त मेजर जनरल ए.के. चतुर्वेदी ने 'राष्ट्रीय सुरक्षा' विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन प्राचीन इतिहास एवं संस्कृत विभाग के अध्यक्ष श्री सुबोध कुमार मिश्र तथा अतिथि स्वागत भूगोल विभाग के अध्यक्ष डॉ० विजय कुमार चौधरी ने किया।

व्याख्यानमाला के तीसरे दिन

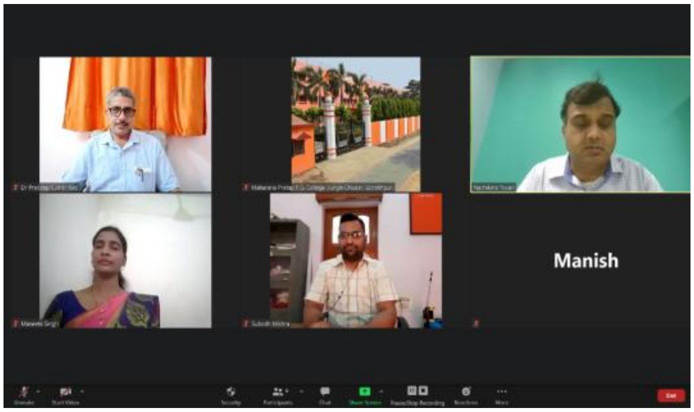

19 अगस्त को "पाणिनीय शिक्षाशास्त्र में विज्ञान एवं गणित विषय पर आई. आई. टी, कानपुर के मैकेनिकल इंजिनियरिंग विभाग के प्रो० नचिकेता तिवारी ने व्याखान प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन श्री सुबोध कुमार मिश्र तथा अतिथि स्वागत भौतिक विज्ञान प्रभारी श्रीमती मनीता सिंह ने किया।

व्याख्यानमाला के चौथे दिन

20 अगस्त को लखनऊ के वरिष्ठ आर्युवेदाचार्य वैद्य अजय दत्त शर्मा ने ”आयुर्वेद एक ईश्वरीय वरदान विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में अतिथि स्वागत वनस्पति विज्ञान विभाग के प्रभारी डॉ० अभय कुमार श्रीवास्तव तथा कार्यक्रम का संचालन श्री सुबोध कुमार मिश्र ने किया ।

व्याख्यानमाला के पाँचवे दिन

21 अगस्त को ”21 वीं सदी में नेतष्त्वः सैन्य सेवा से सीख” विषय पर भारतीय सेना के सेवानिवृत्त लेफ्टिनेन्ट जनरल दुष्यन्त सिंह ने ऑनलाइन उद्‌बोधन दिया। कार्यक्रम का संचालन श्री सुबोध कुमार मिश्र तथा अतिथि स्वागत महाविद्यालय के रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन प्रभारी डॉ० अभिषेक सिंह ने किया।

व्याख्यानमाला के छटवें दिन

22 अगस्त को आई .टी.बी .एच . यू .के रसायन विज्ञान विभाग के सह आचार्य डॉ. वी रामानाथन ने ”भारतीय काव्य परम्परा में स्त्रियों का योगदान विशय पर ऑनलाइन व्याख्यान प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन श्री सुबोध कुमार मिश्र, अतिथि स्वागत हिन्दी विभाग की अध्यक्ष डॉ आरती सिंह तथा अध्यक्षीय उद्‌बोधन एवं आभार ज्ञापन प्राचार्य डॉ . प्रदीप कुमार राव ने किया।

व्याख्यान माला : समापन

23 अगस्त को ऑनलाइन आयोजित युगपुरुश ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजय नाथ जी महाराज एवं राष्ट्र सन्त महन्त अवेद्यनाथ स्मृति सप्त दिवसीय व्याख्यानमाला के समापन अवसर पर ” कश्मीरः कल आजकल और कल विषय पर प्रखर राष्ट्रवादी चिन्तन और भारतीय कश्मीरी मानवाधिकार कार्यकर्ता श्री सुशील पण्डित ने व्याख्यान प्रस्तुत

किया। कार्यक्रम में अतिथि स्वागत राजनीति शास्त्र विभाग के प्रवक्ता डॉ . कृष्ण कुमार पाठक, अध्यक्षीय उद्बोधन व आभार ज्ञापन प्राचार्य डॉ. प्रदीप कुमार राव तथा कार्यक्रम का संचालन कार्यक्रम संयोजक श्री सुबोध कुमार मिश्र ने किया । सप्तदिवसीय व्याख्यानमाला में महाविद्यालय के फेसबुक और यूट्यूब चैनल पर बड़ी संख्या में शिक्षक, विद्यार्थी और श्रोतागणों सक्रिय रुप में उपस्थित रहें।

छात्र संघ चुनाव बैठक

24 अगस्त को महाविद्यालय में कोविड–19 का पूर्णतः पालन करते हुए छात्रसंघ चुनाव बैठक शिक्षक– प्राचार्य के बीच सम्पन्न हुआ। बैठक में तकनीकी विशेषज्ञ श्री नीलांक राव द्वारा ऑन लाइन प्रतिनिधि चुनाव हेतु ऑनलाइन प्रश्नपत्र निर्माण एवं ऑन लाइन चुनाव प्रक्रिया की तकनीकी जानकारी दी गई। बैठक में शिक्षक प्राचार्य उपस्थित रहे।

ऑनलाइन छात्रसंघ कक्षा प्रतिनिधि का चुनाव

26 अगस्त को ऑन लाइन छात्र संघ के प्रथम चरण में कक्षा प्रतिनिधियों के चुनाव का आयोजन किया गया जिसके अन्तर्गत विषय शिक्षकों द्वारा गूगल फार्म प्रश्नपत्र बनाकर विद्यार्थियों के ईमेल आईडी पर भेज कर उनसे उत्तर प्राप्त किया गया तत्पश्चात प्राप्तांक, कक्षा में उपस्थिति एवं आचरण व्यवहार के योग के आधार पर विभिन्न विशयों से कुल 45 कक्षा प्रतिनिधि चुने गये ।

ऑनलाइन छात्रसंघ चुनाव हेतु पर्चा दाखिला

26 अगस्त को छात्र संघ चुनाव हेतु अध्यक्ष पद पर तीन, उपाध्यक्ष पद पर दो, महा मंत्री पद पर तीन तथा पुस्तकालय मंत्री पद पर दो प्रतिनिधियों ने ऑनलाइन पर्चा दाखिल किया।

ऑनलाइन छात्र संघ चुनाव – योग्यता भाषण

27 अगस्त को महाविद्यालय में योग्यता भाषण का आयोजन किया गया । इस योग्यता भाषण का महाविद्यालय के फेसबुक तथा यूट्यूब पर सीधा प्रसारण किया गया। योग्यता भाषण में अध्यक्ष पद के लिए श्री सत्य प्रकाश तिवारी (बी. ए अन्तिम वर्ष) श्री रामसकल प्रसाद (एम. कॉम. अन्तिम वर्ष) श्री अरुण शर्मा (बीए अन्तिम वर्ष), उपाध्यक्ष पद के लिए श्री राकेश कुमार (बी. ए. भाग दो) सुश्री शशिकला गौड़ (बी .ए .अन्तिमवर्ष) महामंत्री पद के लिए श्री अभय राज वर्मा (बीए भाग दो) श्री सुमित सिंह (बी.एड्. अन्तिम वर्ष) श्री अनुराग सिंह (बीकॉम अन्तिमवर्ष), पुस्तकालय मंत्री पद के लिए श्री राकेश गुप्ता (बी.ए भाग दो), तथा श्री सन्देश सिंह (बी.ए भाग दो) अपना विचार प्रस्तुत कर अपने पक्ष में मतदान करने की अपील की। योग्यता भाषण का आयोजन चुनाव अधिकारी डॉ. विजय कुमार चौधरी ने किया।

छात्र संघ चुनाव हेतु ऑन –लाइन मतदान

28 अगस्त को प्रातः 8:00 बजे से ऑनलाइन मतदान प्रारम्भ हुआ। मतदान का लिंक प्रातः 8:00 बजे पंजीकृत मतदाताओं के ई–मेल पर भेजा गया। लिंक के माध्यम से मतदाता विद्यार्थियों ने मतदान दिया। पंजीकृत 1268 मतदाताओं में से 693 मतदाताओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया। अध्यक्ष पद पर श्री सत्यप्रकाश तिवारी उन्होंने अपने निकटतम प्रतिद्वन्दी श्री अरुण शर्मा को 248 मतों से पराजित किया। उपाध्यक्ष पद पर सुश्री शशि कला गौंड 85 मतों के अन्तर से अपने निकटतम प्रतिद्वन्दी श्री राकेश कुमार को पराजित किया। महामंत्री पद पर श्री अभय राज वर्मा ने अपने निकटतम प्रतिद्वन्दी श्री सुमित कुमार सिंह को 30 मतों से पराजित कर विजयी रहे तथा पुस्तकालय मंत्री पर श्री राकेश गुप्ता ने अपने निकटम प्रतिद्वन्दी श्री सन्देश कुमार को 241 मतों से पराजित कर विजयी रहे। विजयी प्रतिभागियों को प्राचार्य प्रदीप कुमार राव तथा छात्र संघ चुनाव अधिकारी डॉ. विजय कुमार चौधरी ने शुभकामनाएँ दी।

राजनीति शास्त्र विभाग के तत्वाधान में – महाराणा प्रताप पी . जी कॉलेज, जंगल धूसड़ द्वारा "भारत की पड़ोस नीतिः सामयिक राजनयिक विमर्श" पर आयोजित आयोजित दो दिवसीय ऑनलाइन अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

उद्घाटन

29–30 अगस्त को राजनीति षास्त्र विभाग के तत्वाधान में "भारत की पड़ोसी नीति : सामयिक राजनयिक विमर्श" विषय पर दो दिवसीय ऑन लाइन अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का उद्घाटन पूर्व निदेशक यशवन्तराव चाव्हाण राष्ट्रीय सुरक्षा और रक्षा विश्लेषण केन्द्र के बीज वक्तव्य द्वारा हुआ । मुख्य वक्ता महाराष्ट्र, रक्षा एवं राजनयिक मामलों के विषेशज्ञ प्रो गौतम सेन ने इस विषय पर विचार प्रस्तुत किया। संगोष्ठी की विषय प्रस्तावना समन्वयक सीएसएसआई पी, राजनीति विज्ञान विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के प्रो तेज प्रताप सिंह ने रखी, स्वागत उद्बोधन डॉ प्रदीप कुमार राव, कार्यक्रम का संचालन राजनीति शास्त्र विभाग प्रभारी डॉ अविनाश प्रताप सिंह तथा आभार ज्ञापन डॉ. कृष्ण कुमार पाठक ने किया।

प्रथम तकनीकी सत्र

संगोष्ठी के प्रथम तकनीकी सत्र में" भारत पाकिस्तान सम्बध : चुनौतियाँ एवं सामाधान के विविध आयाम विषय पर रक्षा अध्ययन विश्लेषण संस्थान नई दिल्ली के सीनियर फेलो डॉ. अशोक बहुरिया ने अध्यक्षीय उद्बोधन दिया । विशेष वक्ता के रूप में कराची विश्वविद्यालय में अन्तर्राष्ट्रीय मामलों के विषेशज्ञ प्रो . नौशीन वासी ने इस विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया । कार्यक्रम का संचालन डॉ . अविनाश प्रताप सिंह तथा आभार ज्ञापन डॉ . कृष्ण कुमार पाठक ने किया । वेबिनार में गोवा विश्वविद्यालय से प्रो राहुल मणि त्रिपाठी, उस्मानिया विश्वविद्यालय , हैदराबाद से प्रो जी राम रेड्डी सहित देश और दुनिया के अनेक विद्वान और रिसर्च स्कॉलर समिलित रहे।

द्वितीय तकनीकी सत्र

संगोष्ठी के द्वितीय तकनीकी सत्र में" भारत–नेपाल सम्बन्ध : वर्तमान परिप्रेक्ष्य" विषय पर नेपाल में भारत के पूर्व राजदूत श्री मंजीव सिंह ने अध्यक्षीय उद्बोधन दिया। विशेष वक्ता के रूप में कांग्रेस के हाऊस ऑफ रिप्रजेटेटिव सदस्य डॉ . अमरेश सिंह ने इस विषय पर अपना विचार प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अविनाश प्रताप सिंह, प्रश्नों का संकलन व प्रस्तुतीकरण डॉ. कृष्ण कुमार पाठक तथा आभार ज्ञापन काशी हिन्द विश्वविद्यालय राजनीति विज्ञान विभाग के आचार्य प्रो तेज प्रताप सिंह ने किया।

तृतीय तकनीकी सत्र

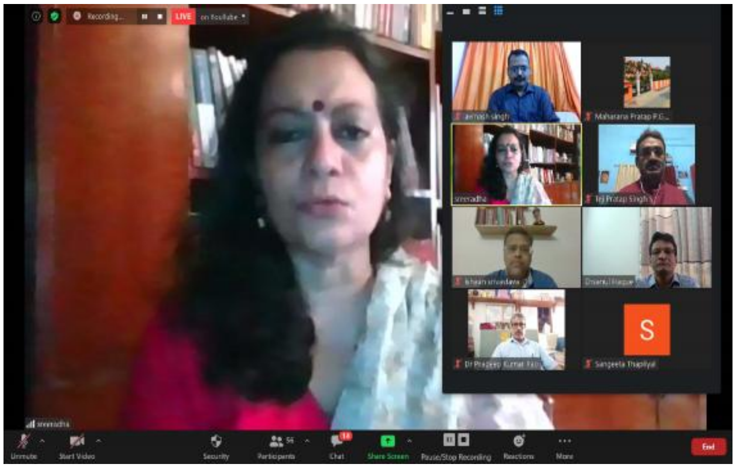

30 अगस्त को ऑनलाइन संगोष्ठी के दूसरे दिन तृतीय तकनीकी सत्र में" भारत – बांग्लादेश सम्बन्धः आन्तरिक एवं बाह्य सुरक्षा के विशेष सम्बन्ध" विषय पर विवेकानन्द इण्टरनेशल फाउण्डेशन की सीनियर फेलो नई दिल्ली तथा अब्दुल कलाम आजाद एशिया अध्ययन केन्द्र कोलकाता की पूर्व कार्यकारी निदेशक प्रो. श्री राधा दत्ता ने अध्यक्षीय उद्बोधन दिया। विशय विषेशज्ञ के रूप में ढाका विश्वविद्यालय, बांग्लादेश के प्रो एहसानुल हक ने अपना विचार प्रस्तुत किया। विशेष वक्ता के रूप में केन्द्रीय विश्वविद्यालय, गुजरात के अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति केन्द्र के अध्यक्ष प्रो. मनीष ने इस पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन एवं अतिथि परिचय डॉ. अविनाश प्रताप सिंह तथा आभार ज्ञापन डॉ कृष्ण कुमार पाठक ने किया।

चतुर्थ तकनीकी सत्र

संगोष्ठी के चतुर्थ तकनीकी सत्र में" भारत–चीन सम्बन्धों का नवीनतम आयाम" विषय पर प्रो. जी रामरेड्डी ने अध्यक्षीय उद्बोधन प्रस्तुत किया । विशेष वक्ता के रूप में गोवा विश्वविद्यालय, राजनीति शास्त्र विभाग के अध्यक्ष प्रो. राहुल मणि त्रिपाठी ने अपना विचार प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ अविनाश प्रताप सिंह ने किया।

समापन सत्र

दो दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय ऑनलाइन संगोष्ठी के समापन अवसर पर उत्तर प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री गोरक्षपीठाश्वर महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज का सानिध्य प्राप्त हुआ। समापन समारोह में लेफ्टिनेंट जनरल (सेवानिवृत्त) दुष्यन्त सिंह, पुणे से प्रो. गौतम सेन, गुजरात से प्रो मनीष, मुम्बई से प्रो लियाकत खान तथा प्रो. हर्ष सिन्हा, डॉ. बलवान सिंह सहित गुजरात, पश्चिम बंगाल, हिमाचल, दक्षिण भारत सहित अनेक प्रान्तों

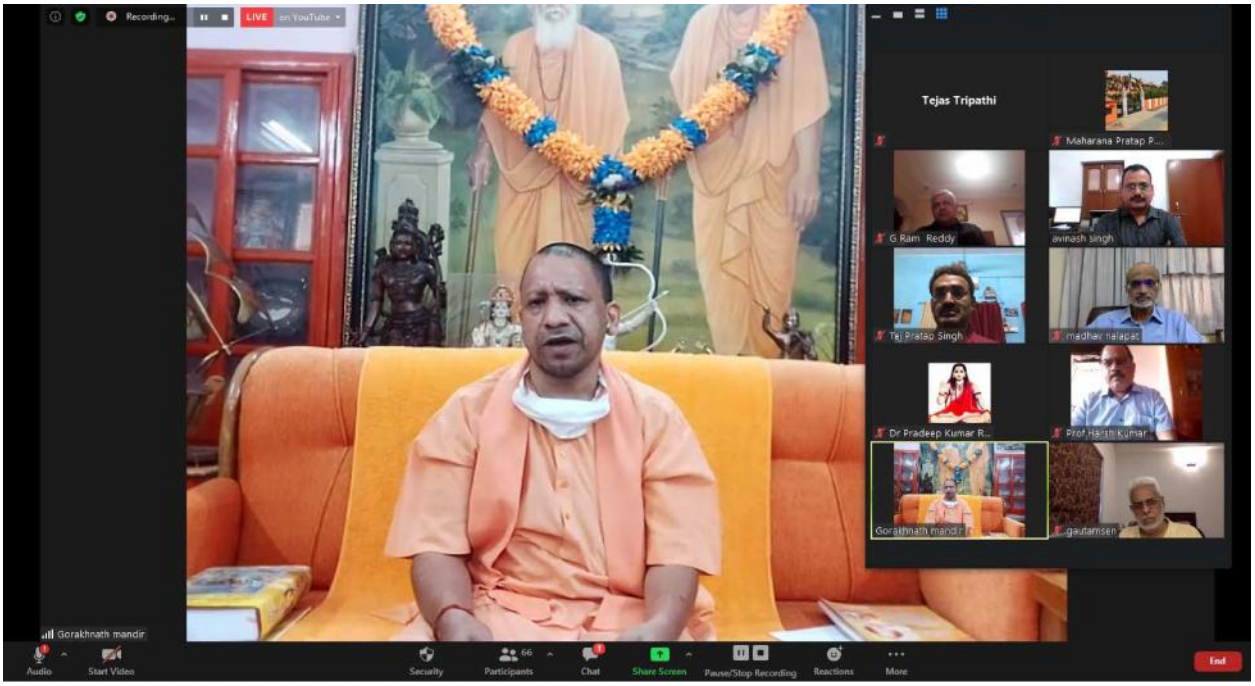

से प्रतिभागी ऑनलाइन सम्मिलित हुए। कार्यक्रम का संचालन संगोष्ठी संयोजक डॉ. अविनाश प्रताप सिंह, प्रश्नों का संयोजन डॉ. कृष्ण कुमार पाठक तथा आभार ज्ञापन प्राचार्य डॉ. प्रदीप कुमार राव ने किया।